हिलोरें लेती चिति, सूर्योदय से सूर्यास्त तक

श्रीगुरुमाई के जन्मदिन महोत्सव का वृत्तान्त

२४ जून, २०१८

श्री मुक्तानन्द आश्रम

भाग ७

गुरुमाई जी के जन्मदिन महोत्सव २०१८ के प्रतिभागियों द्वारा

सिद्धयोग संगीत का रस

मन्त्रों की ध्वनि . . . आइए पहले आपको एक संक्षिप्त इतिहास बताते हैं।

वर्ष २०१६ में, गुरुमाई जी के कहने पर सभी स्वामीगण ने माह में एक बार, मन्त्र-पाठ आरम्भ किया — पहले भगवान नित्यानन्द के मन्दिर में और इस वर्ष, २०१८ से श्री निलय में। गुरुमाई जी ने स्वामीगण को इन मन्त्रों का पाठ करने के लिए प्रोत्साहित किया जो उन्होंने १९९० के दशक के आरम्भ में, शास्त्रों का अध्ययन करते समय ब्राह्मणवृन्द से सीखे थे। इस तरह से स्वामीगण, इस ज्ञान को खुद अपने अन्दर व श्री मुक्तानन्द आश्रम में जीवन्त रखेंगे। हर माह, स्वामीगण यह चुनाव करते हैं कि विशेष अवसर, महोत्सव या वर्षगाँठ पर कौन-से मन्त्रों का पाठ करना चाहिए।

सन् २०१८ में, गुरुमाई जी के जन्म दिन पर, श्री मुक्तानन्द आश्रम में निवास करने वाले दस सिद्धयोग स्वामीगण, गुरुमाई जी को मन्त्रों की भेंट अर्पित करने की पूरी तैयारी करके आए थे। उन्होंने सामवेद से, इन्द्रस्य साम मन्त्रों का चयन किया था — स्वर्ग और वर्षा के देवता, इन्द्रदेव का सम्मान करने के लिए।

इन्द्रस्य साम मन्त्र में कहा गया है :

इन्द्रदेव सभी के संरक्षक हैं।
इन्द्रदेव सभी के सहायक हैं।
वे सदा अच्छाई का साथ देते हैं, वे जो हमारी प्रार्थनाएँ सुनते हैं।
मैं महाबलशाली, भगवान इन्द्र का, जो बहुजन आराध्य हैं, आवाहन करता हूँ।
उदार हृदय के स्वामी इन्द्र हमें सुख और समृद्धि का वरदान दें।

चारों वेदों में सामवेद तीसरा वेद है; इससे पहले आते हैं, ऋग्वेद व यजुर्वेद और इसके बाद, अथर्ववेद। सामवेद ऋचाओं और मन्त्रों का वेद है। संस्कृत शब्द समन् का अर्थ है, "संगीत" या "स्वर।" इसका अर्थ "लयबद्ध स्तोत्र" या "स्तुतिगान" भी है। संस्कृत शब्द समन् ही से इस वेद को अपना नाम मिला है। सामवेद की ऋचाओं में वह ज्ञान समाहित है जो ब्राह्मणवृन्द द्वारा गाया जाता है।

सामवेद के १५४९ ऋचाओं में कई ऋग्वेद से लिए गए हैं; सही अर्थों में सामवेद इन मन्त्रों का संगीतमय संकलन है। सामवेद के ऋचाओं भारत के शास्त्रीय संगीत के रागों के मूल-स्वरों में गाए जाते थे और आज भी गाए जाते हैं। हर राग, स्वरों की एक विशिष्ट संरचना है और इसका अपना ही एक रस या गुण है।

जब स्वामीगण इन्द्रस्य साम मन्त्र गा रहे थे, तब ऐसा अनुभव हो रहा था कि मानो हमें समय में पीछे की ओर ले जाया जा रहा है — उनके स्वरों की गूँज यह दर्शा रही थी कि ये मन्त्र कितने प्राचीन, आदि कालीन हैं। ज़रा कल्पना करें : हज़ारों ऋषि-मुनि और ब्राह्मणवृन्द इन शक्तिशाली मन्त्रों को सृष्टि के कल्याण के लिए, पंचतत्त्वों का यानि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश का सन्तुलन बनाए रखने के लिए और मानवमात्र के उत्थान के लिए गाते रहे हैं।

एक प्रतिभागी ने बताया :

> स्वामीगण जब मन्त्रोच्चार कर रहे थे तब ऐसा लग रहा था मानो हम समय के परे चले गए हों। वे एक विशेष स्वर को दीर्घकाल तक गा रहे थे और मैंने देखा कि बहुत ही सहजता से, मेरे बोध में परिवर्तन हो रहा था। मुझे महसूस हो रहा था कि मेरे अन्तर में मन्त्र गुँजायमान हो रहे हैं।

सामवेद से, स्वामीगण की इस भेंट की समाप्ति पर, संगीत-मंडली के कन्डक्टर, कृष्ण हदाद ने वाद्य संगीतकारों को संकेत किया। और संयुक्तरूप से ध्वनियों की धारा बहने लगी।

वाद्य संगीतकारों ने नामसंकीर्तन की माला की पहली नाम-धुन के राग को बजाना आरम्भ किया। यह संगीत हमारी सभी इन्द्रियों, हमारे हृदय और आत्मा के लिए एक भोज था। गायन के साथ-साथ

पियानो, वॉयलन, हारमोनियम, मृदंग, मंजीरे और तम्बूरे से निकलते उत्कृष्ट स्वर एक लय में हिलोरें ले रहे थे।

हमारा पहला नामसंकीर्तन था, भूपाली राग में, 'ॐ नमः शिवाय'। यह शक्तिपात दीक्षा मन्त्र है जिसे कई दशकों से, सिद्धयोग पथ के गुरु, नए साधकों को प्रदान करते आए हैं। इस मन्त्र ने विश्व के कितने ही लोगों का जीवन परिवर्तित कर दिया है। हमारे गुरुओं ने, अपनी उदारता और करुणावश, कितने ही तरीक़ों से हमें ये मन्त्र प्रदान किए हैं। शक्तिपात ध्यान-शिविरों व सत्संगों में, गुरुमाई जी, इस मन्त्र को गाने के लिए और इन पवित्र अक्षरों पर ध्यान करने के लिए लोगों का मार्गदर्शन करती हैं। सिद्धयोग पथ के परिचयात्मक कार्यक्रमों में भी जिज्ञासुओं को यह मन्त्र प्रदान किया जाता है। सिद्धयोग आश्रमों में और जिन स्थानों पर हम यात्राओं के लिए जाते हैं, वहाँ श्रीगुरु के आसन के ऊपर यह मन्त्र लिखा होता है। आश्रम के अन्य भागों में भी यह मन्त्र आपको दिख जाएगा, जैसे कार्ड पर लिखा हुआ, कलाकृतियों में पेन्ट किया हुआ या अन्य माध्यमों से बनाया हुआ। और यह इसलिए कि हमें, अपने अन्तर में और समस्त संसार में दिव्यता की उपस्थिति का स्मरण कराया जा सके।

श्री मुक्तानन्द आश्रम के स्टाफ़ के एक सदस्य ने कहा :

> वर्षों पहले जब मैं कॉलेज की अपनी पढ़ाई पूरी कर, सेवा अर्पित करने आश्रम आई थी तब अन्नपूर्णा भोजन हॉल में मेज़ों पर कार्ड रखे रहते थे। उन पर सिद्धयोग के उद्धरण लिखे होते थे। उनमें से एक था : 'ॐ नमः शिवाय'। इसने मेरी आँखें खोल दीं। मुझे समझ में आया कि मन्त्र न केवल ध्यान और नामसंकीर्तन के समय दोहराने के लिए है, अपितु हर समय दोहराने के लिए है! यह एक बोध है जिसे मैं सतत बनाए रख सकती हूँ, कुछ भी करते समय मैं मन्त्र-जप को अपने श्वास-प्रश्वास के साथ जोड़ सकती हूँ।

१९७० से बाबा जी और गुरुमाई जी ने, दर्शन के लिए पहली बार आने वाले लोगों को, छोटे-से कार्ड देने आरम्भ किए जिन पर मन्त्र लिखा होता था। इन पर प्रायः गुरुओं का फ़ोटो या मन्त्र की शक्ति के बारे में सिखावनियाँ या ध्यान-निर्देश होते थे। कई नए साधकों के लिए ये मन्त्र-कार्ड न केवल औपचारिक रूप से मन्त्र प्राप्त करने का साधन थे बल्कि पवित्र यन्त्र भी थे और सिद्धयोग के अभ्यास, मन्त्र-जप के साथ उनका परिचय भी इनके माध्यम से होता था। वे कहीं भी जाएँ, उनके अभ्यास को सम्बल प्रदान करने का सुविधाजनक घरेलू साधन यह कार्ड उनके साथ रह सकता था। आज भी, कई ऐसे लोग हैं, जो कहीं भी जाते समय अपना मन्त्र-कार्ड अपने साथ रखते हैं। उन्होंने कई वर्षों से, बल्कि कई दशकों से उसे सभाँल कर रखा है। कुछ सिद्धयोगी जो सेना में कार्य करते हैं, मन्त्र-कार्ड को अपनी जेब में, अपने हृदय के पास रखते हैं; इस तरह, उन्हें अपने देश की सेवा करते समय कृपा और संरक्षण मिलता है।

जब तक मन्त्र के स्वर मृदंग की ध्वनि में विलीन नहीं हो गए, हम 'ॐ नमः शिवाय' की मन्त्र-धुन गाते रहे। बहुत सतर्कता के साथ और कन्डक्टर के संकेत पर, ड्रम बजाने वाले संगीतकार ने जोश से भरी एक हलकी-फुलकी ताल छेड़ी। उधर मंजीरे के स्वर ऊँचे हुए तो ताल ने भी तेज़ी पकड़ ली। जल्द ही हम वैभवशाली दरबारी राग में भगवान शिव की उपासना करते, हृदय को झंकृत करने वाला एक और नामसंकीर्तन, 'जय जय शिव शम्भो, महादेव शम्भो' गाने लगे।

गुरुमाई जी ने फ़रवरी, १९८८ में, गुरुदेव सिद्धपीठ में, उस वर्ष महा शिवरात्रि पर होने वाले नामसंकीर्तन सप्ताह की पूर्णाहुति के लिए, इस नामसंकीर्तन की रचना की थी। एक सप्ताह बाद गुरुमाई जी एक सत्संग शृंखला के लिए दिल्ली गईं। बड़े-से पंडाल में, हज़ारों लोगों ने गुरुमाई जी के दर्शन प्राप्त किए और सत्संगों में भाग लिया। इनमें से कई सत्संगों में और दर्शन के समय संगीत मंडली यह नया नामसंकीर्तन गाती — 'जय जय शिव शम्भो'। लोगों को यह मन्त्र-धुन बहुत पसन्द आई। उस समय यात्रा पर गए स्टाफ़ के एक सदस्य ने कहा कि उन्हें अब भी याद है कि लोग कैसे गुरुमाई जी की इस पूरी यात्रा के दौरान, सत्संग-स्थल से आते-जाते समय, रोज़ बस में यही नामसंकीर्तन गाते थे। वे इस संकीर्तन की शक्ति में मदमत्त, ज़ोर-ज़ोर से इसे गाते।

और हम ने गुरुमाई जी के जन्मदिन पर 'जय जय शिव शम्भो' नामसंकीर्तन कर इसकी शक्ति को निश्चित रूप से महसूस भी किया। हम सिद्धयोग नामसंकीर्तन के अभ्यास का आनन्द लेते रहे और इसके भिन्न-भिन्न रसों में खुद को सराबोर करते रहे। हमने प्रसन्नता का आवाहन करने वाले धनी राग में 'ॐ नमो भगवते मुक्तानन्दाय' गाया, शक्तिपूर्ण और सरस राग माण्ड में 'काली दुर्गे नमो नमः' गाया; सुमधुर, सुरीले राग तिलंग में 'श्री कृष्ण, नील कृष्ण, बाल कृष्ण, जय जय' गाया और अन्त में प्रशान्ति व गहराई प्रदान करने वाले भूपाली राग में, 'ॐ नमो भगवते मुक्तानन्दाय' का संकीर्तन किया।

वर्षों से गुरुमाई जी रस के बारे में कई सिखावनियाँ देती आई हैं, जिसमें शामिल है दिव्य नामसंकीर्तन का रस। इस वर्ष, अपने सन्देश प्रवचन 'सत्संग' में, गुरुमाई जी ने सत्यरस, यह शब्द हमें प्रदान किया, जिसका अर्थ है "सत्य का अमृत।" यही वह अमृत है, यही वह सुधा है जिसका आनन्द हम गुरुमाई जी के सन्देश का अभ्यास करते समय और अपने सत्संग का निर्माण करते समय उठाते हैं।

गुरुमाई जी हमें सिखाती हैं कि सिद्धयोग अभ्यासों की कृपा-पूर्ण साधना यानि तपस्या सत्यरस प्रदान करती है। नामसंकीर्तन, निःसन्देह, इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण है। अलग-अलग नामसंकीर्तन करते समय हम कई सारे रसों का अनुभव करते हैं — जैसे श्रद्धा, ललक, प्रेम, पराक्रम, शान्ति — ये सब सत्यरस के रूप हैं। ये सब परम सत्य से उदित होते हैं और हमें वापस परम सत्य तक ले जाते हैं।

२४ जून को होने वाले नामसंकीर्तनों के बारे में एक प्रतिभागी कहते हैं :

> वैसे ही जैसे एक सुन्दर माला अलग-अलग फूलों से बनती है — हर फूल का अलग-अलग आकार, रंग, सुगन्ध और स्पर्श होता है और एक साथ वे एक परिपूर्ण रचना तैयार करते हैं — नामसंकीर्तनों की माला बड़ी सहजता से एक धुन से दूसरी धुन, एक राग से दूसरे राग में बहती गई। विभिन्न रागों, संगीत-रचनाओं, वाद्ययन्त्रों और सुरों के संगम ने सिद्धयोग संगीत का एक सुन्दर परिधान बुना जो हमें हमारे अपने हृदय-स्थान में ले गई।

नामसंकीर्तन की माला का समापन करने की कृष्ण हदाद की रीति, उनके दृढ़ संकल्प का परिचय दे रही थी; उन्होंने इतने वर्षों में सिद्धयोग संगीत के सिद्धान्तों को अभ्यास में लाने की अपनी कार्य-कुशलता को और भी परिष्कृत किया है। कृष्ण ने वर्ष २००१ में ये सिद्धान्त सीखे थे जब उन्होंने किशोर-युवाओं के लिए हुई प्रेमोत्सव संगीत रिट्रीट में भाग लिया था। उस समय कृष्ण ने कॉलेज में संगीत सीखना शुरू किया था, फिर उन्होंने संगीत में विशारद किया और संगीत-शिक्षा में डॉक्ट्रेट की डिग्री प्राप्त की। वर्तमान में, कृष्ण माध्यमिक शिक्षा एवं हाई स्कूल के विद्यार्थियों को संगीत सिखाते हैं और नियमित रूप से संगीत निर्देशक व संचालक की सेवा अर्पित करने के लिए श्री मुक्तानन्द आश्रम आते हैं।

सिद्धयोग संगीत के रस में निमग्न होने के बाद हम और भी खुश हो गए जब जैज़ पियानो वादक, कैनी वर्नर ने अपनी संगीतमय रचना सुनाई। गुरुमाई जी के जन्मदिन महोत्सव पर अपना योगदान देने के लिए, कैनी ने बस एक दिन पहले ही की बोर्ड पर इस गीत की रचना की थी। इसका शीर्षक था, "लाइट अप द स्काय" ["Light Up the Sky"], हमें यह जानकर बहुत ही आश्चर्य हुआ कि एक रात में इतनी सुरीली और पेचीदा संगीत-रचना हुई और अगले ही दिन उसे वहाँ बजाया भी गया — वह भी इतनी सटीकता और इतने विश्वास के साथ!

हम इस गीत के सुरों को पिआनो पर ध्यान से सुन रहे थे। यह हमारे लिए खुली आखों से किया गया ध्यान था। संगीत में कैनी की निपुणता, जैज़ संगीतकारों और जैज़ के शौकीन लोगों में सुप्रसिद्ध है। संगीत के प्रति उनके कभी न ख़त्म होने वाले जोश ने सैकड़ों संगीत विद्यार्थियों को संगीत सीखने और खुद महान संगीतज्ञ बनने के लिए प्रेरित किया है। हाँलाकि कैनी ने संगीत की दुनिया में बहुत नाम कमाया है, उन्होंने अनेकों बार यह कहा है कि गुरुमाई जी के लिए गाने और बजाने में उन्हें सर्वोच्च आनन्द मिलता है; वे कहते हैं कि जब वे गुरुमाई जी की सेवा में बजा रहे होते हैं तो वह संगीत उनके लिए सवार्धिक अर्थपूर्ण होता है। वर्ष २०१८ के गुरुमाई जी के जन्मदिन पर गाने व बजाने की कैनी की इच्छा, हम सबके लिए तृप्तिदायक रही। ऐसे क्षणों में, भला कौन यह नहीं सोचेगा कि गुरुमाई जी के जन्मदिन महोत्सव में भाग लेना उनसे प्रसाद के बाद प्रसाद के बाद प्रसाद पाना है।

कैनी की प्रस्तुति के बाद हम ज्योत से ज्योत जगाओ गाने के लिए खड़े हुए। पाँच पुजारिओं ने गुरुमाई जी की आरती उतारी। वे उनके समक्ष अर्ध चन्द्राकार में खड़े होकर हलदी, कुमकुम, अक्षत, फूलों से सजी थाल से उनकी आरती कर रहे थे और आरती के दीपों की नृत्य करती ज्योत में जगमगा रहे थे। सिद्धयोग पथ पर आरती के हर तत्त्व का विशेष महत्त्व है। ज्योत, आत्मा की ज्योत का प्रतीक है, वह दर्शाती है कि हमारी अन्तर-ज्योत और श्रीगुरु के अन्दर की ज्योत एक ही है। श्रीगुरु की आरती करके, हम अपने अन्दर यह दिव्य ज्योत जगाने के लिए उनका सम्मान करते हैं।

उनमें से एक पुजारी, सोलह वर्षीय एक किशोर था जो बचपन से ही सिद्धयोग पथ का अनुसरण कर रहा है। बाद में उसने आरती करने का अपना अनुभव बताया। उसने यह भी बताया कि उसने इस अनुभव से जो सीखा है उसे वह किस तरह से आगे लेकर जाएगा। वह कहता है :

> पुजारी की सेवा अर्पित करते समय, एक क्षण ऐसा था जब गुरुमाई जी ने सीधे मेरी ओर देखा। जब उन्होंने मेरी ओर देखा तो मुझे इतना आनन्द महसूस हुआ कि मेरी हलकी-सी हँसी छूट गई। मैं यह प्रेम और आनन्द अन्य लोगों के साथ बाँटना चाहता हूँ। अपनी नौकरी करते हुए इसे सबके साथ बाँटने से बेहतर और क्या हो सकता है! गर्मियों में मैं एक डिपार्टमेन्ट स्टोर में काम करता हूँ और अपने हर ख़रीददार को एक बड़ी-सी मुस्कान देने की याद रखता हूँ। मैं लोगों को प्रेम देना चाहता हूँ, चाहे वे मेरे साथ कैसा भी व्यवहार क्यों न करें, और इस तरह मैं सिद्धयोग पथ का दूत होने का अभ्यास करना चाहता हूँ।

सत्संग में भाग लेने से — ख़ासकर, २०१८ के गुरुमाई जी के जन्मदिन पर इस सत्संग में भाग लेने के अनन्त लाभ हैं। ये श्री निलय में बिताए गए समय से या इस वृत्तान्त को पढ़ने से कहीं अधिक हैं। सत्संग करने से हमारा ज्ञान बढ़ता है और हमारी दृष्टि परिष्कृत होती है। इसके कारण हम यह देख पाते हैं कि हम अपने उत्तरदायित्वों को कैसे निभाएँ और भगवान से मिली जीवनरूपी इस भेंट को कैसे अपनाएँ। यह एक नए उत्साह के साथ साधना करने की हमारी इच्छा को प्रबल बनाता है। यह हमें हमारी अपनी जागरूकता और संसाधनों को पुनः नियोजित करके, हमारे जीवन में जो कृपा का स्रोत है उसे कुछ वापस देने के लिए प्रेरित करता है। हमें इस धरा का सम्मान करने, हमारा खुद का सम्मान करने और जो हम जानते हैं या जो हमारे पास है, उसे एक-दूसरे के साथ छोटे, शालीन और महान तरीक़ों से, हमारी क्षमता और हमारी कुशलता के अनुसार बाँटने हेतु तत्पर रहने के लिए उत्साहित करता है।

यह हमारा सद्भाग्य है कि हम हर माह, जून में गुरुमाई जी से सद्गुण वैभव प्राप्त करते हैं, आनन्दमय जन्मदिन पर उनके सद्गुण — और २४ जून का सबसे ख़ास सद्गुण प्राप्त करते हैं, जिसे हम उस विशेष वर्ष में विकसित करते हैं और उसका पालन करते हैं। जब हम इन सद्गुणों को विकसित करते हैं तथा

अपने कार्यों, विचारों और अपने व्यवहार में इन्हें कार्यान्वित करते हैं तब हम एक सकारात्मक बदलाव लाते हैं, न केवल स्वयं में, बल्कि जो हमारे चारों ओर होते हैं उनमें, और जिस चीज़ को भी हम स्पर्श करते हैं, उसमें। इस *विश्व को एक बेहतर स्वर्ग बनाने* के गुरुमाई जी के मार्गदर्शन को हम पूरा कर रहे हैं। गुरुमाई जी ने वर्ष १९९३ में पहली बार एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन के स्टाफ़ के सदस्यों को उस वर्ष के केन्द्रण हेतु यह मार्गनिर्देश दिया था। और तब से वे ये निर्देश विश्वभर के सेवाकताओं, सिद्धयोगियों और नए साधकों को देती आई हैं।

जब हम श्रीगुरु की कृपा के कारण स्वयं अपने रूपान्तरण और उन अनगिनत लोगों के रूपान्तरण की ओर ध्यान देते हैं, जिनके जीवन कृपा से संवर गए हैं; जब हम सागर की तीव्र लहर की तरह अपने अन्दर कृतज्ञता को उमड़ता हुआ महसूस करते हैं तब हमारी स्वाभाविक प्रक्रिया होती है, वापस लौटाना।

कई लोगों ने बताया है कि सिद्धयोग सत्संगों और शक्तिपात ध्यान शिविरों के उनके अनुभव ने आरम्भ में उन्हें सिद्धयोग पथ की ओर खींचा और आज भी वही अनुभव, उन्हें एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन के कार्य में योगदान देने की प्रेरणा दे रहा है। वे सर्वोच्च अच्छाई की सेवा में अपने प्रयत्न और कौशल अर्पित करना चाहते हैं; वे इस जीवन रूपान्तरणकारी कार्य का हिस्सा बनना चाहते हैं। ऐसा करने से वे सिद्धयोग की धरोहर के निर्माण और उसके सुदृढ़ीकरण में अपना योगदान दे रहे हैं।

हाँलाकि हम यह कह रहे हैं कि गुरुमाई जी के जन्मदिन का सत्संग समापन की ओर है, पर सच कहें तो सत्संग के प्रभाव कभी समाप्त नहीं होते। सत्संग की स्मृति हमारे साथ बनी रहती है। सत्संग का प्रभाव लम्बे समय तक रहता है — इसके लाभ हमारी सत्ता के कण-कणमें, हमारे जीवन के ताने-बाने में समाहित रहेंगे।

इस सत्संग में हमें जैसे ही लगा कि हमने जो समय-सारिणी तय की थी हम उसके अन्त की ओर हैं, गुरुमाई जी ने संगीत मंडली से पूछा कि क्या उन्हें *हे मुसाफ़िर* कव्वाली गानी आती है। बड़े उत्साह के साथ संगीत मंडली ने कहा "जी गुरुमाई जी! हमें आती है!" — और कृष्ण, यह कव्वाली गाने के लिए संगीत मंडली का संचालन करने लगे।

वर्ष २००१ के अपने सन्देश प्रवचन के लिए गुरुमाई जी ने *हे मुसाफ़िर* के संगीत की रचना की थी। यह प्रवचन उन्होंने गुरुदेव सिद्धपीठ में दिया था। उस वर्ष का उनका सन्देश था, "हृदय की सम्मति के साथ वर्तमान की ओर क़दम उठाओ। इसे एक कल्याणकारी पर्व बना लो।"

इस सुन्दर कव्वाली के शब्द हिन्दी और उर्दू भाषा में हैं। इसके शब्द हैं :

हे मुसाफ़िर! पहचान, पहचान
मालिक को तू पहचान॥

तन्हा न उसे अपने दिल-ए तंग में पहचान।
हर बाग़ में, हर दस्त में, हर संग में, पहचान॥
हे मुसाफ़िर! पहचान, पहचान
मालिक को तू पहचान॥

बेरंग में, बारंग में, नैरंग में पहचान।
मंज़िल में, मुक़ामात में, कर संग में पहचान।
हे मुसाफ़िर! पहचान, पहचान
मालिक को तू पहचान॥

हर राह में, हर साथ में, हर संग में पहचान।
हर अज़्म, इरादों में हर आहंग में पहचान।
हे मुसाफ़िर! पहचान, पहचान
मालिक को तू पहचान॥

हर आन में, हर बान में, हर ढंग में पहचान।
आशिक़ है तो दिलबर को हर रंग में पहचान॥
हे मुसाफ़िर! पहचान, पहचान
मालिक को तू पहचान॥

भारत में, रात और दिन के अलग-अलग समय को एक काल कहा जाता है — काल का अर्थ है "समय।" प्रत्येक काल में विशिष्ट समय अवधियों को मुहूर्त कहा जाता है। इसमें से कुछ काल और मुहूर्त विशेषरूप से शुभ होते हैं। हमने जन्मदिन महोत्सव का आरम्भ, आरती से, अरुणोदय-काल में किया था। अभी मध्याह्न काल या अभिजीत मुहूर्त में हमने सत्संग किया। और यह सत्संग समाप्त होने से पहले, कार्यक्रम के संचालक ने एक सरप्राइज़ दिया : कि हम प्रतिभागियों द्वारा बनाई गई समय-सारिणी के बाद भी, कार्यक्रम जारी रहेगा। शाम को यानि सायंकाल के समय, गुरुमाई जी के साथ हम

भगवान नित्यानन्द मन्दिर में सांयकालीन आरती करेंगे। कितनी सुन्दर बात! २४ जून के जन्मदिन महोत्सव में इन तीन सर्वाधिक शुभ कालों का समावेश रहेगा, और इन समयों में हम सिद्धयोग अभ्यास करते रहेंगे।

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

क्रमशः . . .